पत्रिका

Share font-inc Image View Text

कृषि वानिकी से किसानों की आय में अवश्य की जा सकती है बढ़ोतरी

जबलपुर @ पत्रिका. कृषि वानिकी से किसानों की आय में बढ़ोतरी हो सकती है। इसके लिए अच्छी प्रजातियों का चयन करना होगा। यह बात उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान में आयोजित वर्कशॉप में विशेषज्ञों ने कही। कृषि वानिकी व कृषक आजीविका पर प्रशिक्षण कार्यक्रम में उत्तराखंड, हरियाणा, महाराष्ट्र, ओड़िशा, अंडमान, कर्नाटक से भारतीय वन सेवा के अधिकारी शामिल हुए। संस्थान निदेशक डॉ. एचएस गिनवाल ने संस्थान के इतिहास, उद्देश्यों और वानिकी अनुसंधान के क्षेत्र में किए गए कार्यों के बारे मे जानकारी दी। मुख्य अतिथि पू प्रधान मुख्य वन संरक्षक हरियाणा व वन बल प्रमु जगदीश चंद्र ने बताया कि मानव सभ्यता के इतिहास के साथ ही कृषि वानिकी का इतिहास जुड़ा है प्रशिक्षण की संयोजक डॉ. ननिता बेरी ने प्रशिक्षण के कोर्स मॉड्यूल के बारे में बताया। कार्यक्रम मे अनुसंधान समन्वयक नीलू सिंह, डॉ श्याम विश्वनाथ सहित अन्य वैज्ञानिक मौजूद थे।

वन विभाग के अधिकारियों को मिल रहा कृषक आजीविका का ज्ञान

(नव स्वदेश)। ■ जबलपुर

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान में भारतीय वन सेवा के अधिकारियों के लिए कृषिवानिकी एवं कृषक आजीविका विभिन्न राज्यों के लिए समस्या एवं समाधान विषय पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। जिसमे देश के विभिन्न राज्य उत्तराखंड, हरियाणा, महाराष्ट्र, उड़ीसा, अंडमान, कर्नाटक के भारतीय वन कार्यशाला के उद्घाटन अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ. एच.एस. गिनवाल ने संस्थान के इतिहास, उद्देश्यों और वानिकी अनुसंधान के क्षेत्र में संस्थान द्वारा किए गए कार्यों के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की। मुख्य अतिथि बल प्रमुख श्री जगदीश चंद्र ने बताया कि मानव सभ्यता के इतिहास के साथ ही कृषिवानिकी का इतिहास जुड़ा है। साथ ही विभिन्न परंपरागत कृषिवानिकी मॉडल एवं प्रजाति प्रमुख को बढ़ावा देने की बात कही है। प्रशिक्षण की संयोजक डॉ. ननिता बेरी ने प्रशिक्षण कार्यक्रम उद्देश्यों के बारे में बताते हुए कृषकों की आजीविका में कृषि वानिकी के बढ़ते प्रयोग एवं इस साप्ताहिक प्रशिक्षण के कोर्स

जा रही है।

कृषि वानिकी से किसानों की आय में अवश्य की जा सकती है बढ़ोतरी

जबलपुर @ पत्रिका. कृषि वानिकी से किसानों की आय में बढ़ोतरी हो सकती है। इसके लिए अच्छी प्रजातियों का चयन करना होगा। यह बात उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान में आयोजित वर्कशॉप में विशेषज्ञों ने कही। कृषि वानिकी व कृषक आजीविका पर प्रशिक्षण कार्यक्रम में उत्तराखंड, हरियाणा, महाराष्ट्र, ओड़िशा, अंडमान, कर्नाटक से भारतीय वन सेवा के अधिकारी शामिल हुए। संस्थान निदेशक डॉ. एचएस गिनवाल ने संस्थान के इतिहास, उद्देश्यों और वानिकी अनुसंधान के क्षेत्र में किए गए कार्यों के बारे में जानकारी दी। मुख्य अतिथि पूर्व प्रधान मुख्य वन संरक्षक हरियाणा व वन बल प्रमुख जगदीश चंद्र ने बताया कि मानव सभ्यता के इतिहास के साथ ही कृषि वानिकी का इतिहास जुड़ा है। प्रशिक्षण की संयोजक डॉ. ननिता बेरी ने प्रशिक्षण के कोर्स मॉड्यूल के बारे में बताया। कार्यक्रम में अनुसंधान समन्वयक नीलू सिंह, डॉ श्याम विश्वनाथ सहित अन्य वैज्ञानिक मौजूद थे।

समस्या एवं समाधान विषय पर रखे विचार

निज प्रतिनिधि, जबलपुर। उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान में भारतीय वन सेवा के अधिकारियों के लिए कृषिवानिकी एवं कृषक आजीविका के लिए समस्या एवं समाधान विषय पर पाँच दिवसीय प्रशिक्षण सोमवार से प्रारंभ हुआ। 3 से 7 फरवरी तक चलने वाले इस रिफ्रेशर प्रशिक्षण कार्यक्रम में देश के विभिन्न राज्य के भारतीय वन सेवा के अधिकारी सम्मिलित हो रहे हैं। उद्घाटन अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ. एचएस गिनवाल ने संस्थान के इतिहास, उद्देश्यों और वानिकी अनुसंधान के क्षेत्र में संस्थान द्वारा किए गए कार्यों के बारे में जानकारी प्रदान की। मुख्य अतिथि पूर्व प्रधान मुख्य वन संरक्षक हरियाणा एवं वन बल प्रमुख जगदीश चंद्र थे। संयोजक डॉ. ननिता बेरी ने उद्देश्यों के बारे में बताया। कार्यक्रम में डॉ. श्याम विश्वनाथ, पूर्व निदेशक, केएफआरआईए के अलावा टीएफआरआई संस्थान के कार्यालय प्रमुख, प्रभागाध्यक्ष, उप वन संरक्षक, वैज्ञानिक और अधिकारी उपस्थित रहे।